IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

21 वी सदी के हिंदी कहानीयों में नारी चेतना का परिप्रेक्ष्य

1Vaishali Gaikwad.

1Research scholar

1Dr. Babasaheb Ambedkar Marathvada University, Aurangabad. 431001.

स्त्री के अलग .अलग रूप होते है । वह माँए पत्नीए बहनए पुत्री आदि रूपों में दिखाई देती है । जन्म से लेकर जीवन के अंतिम समय तक वह अपने बच्चेए पतिए परिवार के लिए ही जीवन बिताती रहती है । परिवार के सभी सदस्यों के बारे में सोचती है ।परिवार के सभी लोग उस पर ही निर्भर होते है । ऐसे में वह अपने लिए जीवन बिताना या स्वंय के लिए समय नहीं दे पाती है । कभी पुत्री के रूप में कभी पत्नी के रूप में तो कभी माँ के रूप में हमेशा कर्तव्य को निभाती आयी है । उसके इतने बलिदान के बदले उसे परिवार में वो सम्मान नहीं मिला जो उसे मिलना चाहिए था । उसे हमेशा अपमानित ही किया जाता है । प्राचीन काल से ही वह बंधनों में बँधी जीवन बिता रही थी। परिवार और समाज में उसे वह स्थान कभी नहीं मिला जो उसे मिलना चाहिए था । पुरुष प्रधान संस्कृति में उसकी आवाजए इच्छाओं को हमेशा दबाया गया है। वो क्या चाहती है? या क्या सोचती है? इस पर कभी विचार ही नहीं किया गया । घर में वह सिर्फ कामकाजी महिला के रूप में ही दिखाई देती थी । उसका काम चूल्हा चौका करनाए बच्चों की परवरिश करना और पति की सेवा करना ही था। ऐसे में समाज में प्रचलित रुढ़ीए पंरम्परा के वजह से उसका परिवार और समाज के द्वारा शोषण ही होते आया है। समाज में पुरुष को प्रथम और स्त्री को दुय्यम स्थान मिला है। भले ही स्त्री को देवी का दर्जा दिया जाता हो पर वास्तव में पीड़ा भी उसी को दी जाती है। कहीं उसका शारीरिक तो कहीं मानसिक शोषण होते आया है। तब वह सभी अन्याय को सहती थी पर समय बदल गया है।

आज 21 वी सदी में भूमंडलीकरणए बाजारीकरणए आधुनिकीकरण आदि के कारण मानव जीवन में बदलाव आ गया है। मनुष्यए समाजए देश विकास की ओर बढ़ रहा है। स्त्रियों का भी विकास हो गया है। आज की महिला अपने हकए अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुकी है। शिक्षित होकर अपनी लड़ाई स्वंय लड़ रही है। 'आँचल में दूध और आँखों में पानी' यह संकल्पना बदल चुकी है। जिस गति से स्त्रियों का विकास हो रहा है उससे वह प्रभावी नेतृत्व कर रही है । साहित्य के माध्यम से समाज का यथार्थ चित्रण किया जाता है। स्त्री को जागरूक करने समाज में सम्मानए स्वाभिमान अपनी पहचान एवं आत्मनिर्भर बनाने में साहित्य का ही योगदान रहा है। क्योंकि साहित्य ही है जो समाज का दर्पण होता है समाज में जो भी उचित अनुचित घटनाएँ होती है उसे साहित्यकार ही अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है। एक प्रेरणा के रूप में वह समाज को दिशा देने का कार्य करता है। स्त्री की समाधानकारक स्थिति का श्रेय भी इन ही साहित्यकारों को दिया जाता है विशेषतरू स्त्री लेखिका जिन्होंने ने स्त्री को ही केंद्र में रखकर रचनाएँ की है। स्त्री का शोषणए अस्वतंत्रताए हकए अपने अधिकारों से वंचितए अत्याचार आदि सभी विषयों पर उन्होंने लेखन किया है। कुछ लेखिकाओं ने अपने अनुभूति के आधार पर भी रचनाएँ की है और स्त्रीयों को अपने अधिकारों के बारे में जागृत किया है। आज की स्त्री सामाजिकए राजनितिकए आर्थिकए तकनिकी क्षेत्र में कार्य कर रही है। हर एक क्षेत्र में वह अपना प्रतिनिधित्व निभा रही है । और आसमान को छू रही है । साहित्य के क्षेत्र में भी महिला लेखिका ही उभरकर आ रही है। उनके लेखन से साहित्य को एक नई दिशा मिल गई है।

चित्रा मुद्गलए मैत्रेयी पुष्पाए कृष्णा सोबतीए मधु कांकरियाए सुधा अरोड़ाए प्रभा खेतानए दीप्ती खंडेलवालए मन्नू भंडारीए ममता कालियाए मधु कांकरिया आदि लेखिकाओं ने अपने साहित्य लेखन से स्त्रियों को अपने हक के लिए स्वयं ही लड़ना चाहिए । यही उद्देश्य रखते हुए सृजन किया है। साहित्य में स्त्रियों को आगे बढ़ने और अपनी स्थिति को सुधारने के लिएए संघर्ष करने के लिए लेखिकाओं ने

लेखन के द्वारा प्रोत्साहित किया है। आज की महिला दुर्बल एकमजोरए नहीं है बल्कि अपने हकए स्वाभिमान के लिए लड़ने वाली एक स्वतंत्र नारी हैं। खुलकर अपने विचारों को समाज के सामने रख रही है। अपने निर्णय स्वंय ले रही हैं। वो किसी पर आत्मनिर्भर नहीं हैं बल्कि स्वावलंबी हो गई है। वह हर एक क्षेत्र में पुरुष के साथ आगे बढ़ रही है। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जहाँ स्त्री कर्मचारी ना हो। वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर रही है।

मृदुला गर्ग नारी चेतना के बारे में कहती है कीए **ष्जो दृष्टी नारी को सांस्कृतिक ऐतिहासिक छवि के तिलिस्म को तोड़े वह नारी चेतना हैश्०० नारी चेतना सम्पन्न कथा साहित्य स्त्री पुरुष दोनों रच सकते है"।** 1

मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार स्त्री मुक्ति व स्वतंत्रता का अर्थ स्वछंद आचरण या देह प्रदर्शन नहीं बल्कि समाज में पुरुषों के समकक्ष स्त्रियों को प्राप्त अधिकारों का सही उपयोग है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँए स्त्री .पुरुष समानता के लिए संघर्षए पारिवारिकए सामाजिकए सांस्कृतिकए धार्मिक अनेक नारी विषयक समस्याएँ चित्रित है। उनकी रचनाओं में स्त्री पात्र ही प्रमुख रहे है। ' **बिन्नी तू किसकी है'** कहानी में आरती जो की बिन्नी की माँ है पुत्र पाने की आस में पेट में ही लड़की का गर्भ गिराती है ऐसा एक बार नहीं बल्कि बार .बार करती है। **"कै बेर तो इसकी माँ ने गरभ गिराए हैं। दूरबीन से दिखवाए लिए !छोरी निकरी सो गिरवाय दई ! कसाईन है निरी"!** 2

समाज में लड़की से ज्यादा लड़कों को महत्व दिया जाता है। लड़की के जन्म पर लोग दुःखी हो जाते है या उस गर्भ का गर्भपात किया जाता है इसलिए लड़कियों की संख्या कम हो गई है।

"उस दिन मम्मी डॉ॰ अग्रवाल के क्लिनिक से निकलते हुए कैसी आहादित थी .उल्लसितए उंमगो से ओतप्रोत उनका फिट्स .टेस्ट हुआ था और रिपोर्ट मिली थीए जिससे उन्हें पता चला कि अब की बार वे बेटे को जन्म देगी। दो बेटियों के पश्चात् उनके गर्भ में पुत्र पल रहा है .सोचते ही वे गर्वित हो उठीं .मुख दिपदिपा अपूर्व सुख के साथ. साथ एक मुक्ति भाव भी जागा था मन के भीतर कि बसश्३ अब आगे और नहीं !झंझट खत्म"! 3

आज भी देखते है कीए परिवार में लड़का होता है वहाँ परिवार पूरा समझा जाता है।

ष्एक और डिंगरी धर गई मेरे गोपाल पै"।4 दादी अंजू के जन्म पर ही उसके ब्याह की फिकर करने लगीं। समाज में लड़की के जन्म से ही माता .पिता दुःखी होकर चिंता में डूब जाते है। क्योंकि लड़की के विवाह में दहेज़ देने की कुप्रथा के कारण कोई भी व्यक्ति नही चाहता की घर में लड़की का जन्म हो। उसे बोझ समझा जाता है।

इसबार भी **बिन्नी तू किसकी है** कहानी में बेटे के जगह बिन्नी का जन्म होने पर उसकी माँ अन्न नही खाती तो दादी आरती से कहती है कीए **ष्काहे को अन्नजाल त्यागे परी है री आरती !भगवान की देन हं !बेटी .बेटा सब एक ही ठौर के हैं !फिर जाएगौ पूत !कन्या पनमे सुरी से दुखियावे मत"!**5

यहाँ लेखिका ने लड़का .लड़की में समानता को प्रस्तुत किया है।

समाज में जिस तरह लोगों की सोच है कीए लड़की पराई होती है और लड़का ही परिवार का वंश होता है। ऐसे में तीसरी बार भी लड़की का जन्म होने पर पडोसी बिन्नी के पिताजी से कहते है कीए **ष्अरे कितना ही पैसा .वैभव बना रहेए पर किसके लिए एक जीव होता तो सब सुकारथ था .इन लड़कियों का ढक्कनए लेकिनश्००ष्6** समाज में लड़की का स्थान महत्वहीन समझा जाता है।

लेखिका सुधा अरोड़ा की श्बेटी' कहानी में मुन्नी पढ़ना चाहती हैं परतुं अम्मा उसे पढ़ाना नहीं चाहती हैं क्योंकि वह लड़की हैं। परतुं मुन्नी आज की लड़की हैं वह अपने अधिकार के लिए आवाज उठाना जानती हैं। वो कहती है कीए **"अम्मा तुम मेरे साथ जो कर रही होए वह कुछ अच्छा नहीं कर रहीं। तुम पाँच .पाँच लड़कों को पढ़ा सकती होए लेकिन मेरे लिए तुम्हारे घर अकाल हैश्०० मेरी किताब .कॉपी के पैसे तुम्हें भारी हैं अम्मा !"**7

समाज में स्त्री अपने हक के लिए आवाज उठाए या गलत का विरोध करें तो उसे चुप किया जाता है। एक स्त्री दूसरी स्त्री को आगे बढ़ने में बाधा बन रही है। शिक्षा का अधिकार दोनों का है। इसप्रकार समाज में स्त्री .पुरुष के भेद को देखा जाता है।

अम्मा मुन्नी के आवाज उठाने पर कहती है कीए **ष्चुप होती है कि नहीं? बहुत जबान चल गई है तेरी। तू लड़कों की बराबरी करती है !बेटे तो बुढ़ापे की लाठी हैं हमारीए हमें सहारा देंगे। तू पराए घर की दलिददर। तेरी कमाई**

नहीं खानी हमें३ण्ण कह दियाए कान खोलकर सुन ले"। 8 लड़की को इस तरह परिवार के लोग ही समाज की रूढ़ि .परंपराओं जकड़े हुए है।

सुधा अरोड़ा ने अपने आलेख 'सहन शील धारित्री का आत्मपीड़क आनन्द में कहाँ हैं की एष्**एक औरत के संस्कार उसे सात फेरों की मर्यादा और गरिमा में इस कदर जकड़ लेते हैं कि वह बहुत .सा अनचाहा स्वीकार करती चलती है। प्रतिरोध वह करती हैए जब चीजें उसकी बर्दाश्त के बाहर चली जाती हैं"।** 9

स्त्री के पास बड़ी सहनशीलता है। जहाँ चीजें बर्दाश्त के बाहर जाएगी तब वह प्रतिरोध भी करती है।

कहानी 'तीसरी बेटी के नाम' में सुनयना का जन्म होने पर नाराज बूढ़ी बुआ कहती है कीए ष्**हाय मेरे रब्बा ! एक होर कुड़ी? बनाण वाले दे घर मिट्टी थुड़ गई सी"?** 10 तभी सुनयना की माँ कहती है कीए ष्**बुआए ऐसे मत बोलो !यह मेरी बेटी भी है और बेटा भी ! बेटा होता तो भी इतनी ही तकलीफ देकर इतना ही खून बहाकर पैदा होता"।** 11

कहानी के माध्यम से स्त्री .पुरुष समानता प्रस्तुत की है।

सुधा अरोड़ा कहती है समाज में सभी स्त्रियों का शोषण होते आया है। वह उच्च वर्ग की हो या निम्न वर्ग की। शिक्षित वर्ग में स्त्री का मानसिक शोषण होता है और निम्न वर्ग में स्त्री का शरीरिक शोषण होता है। स्त्री को अपने इच्छानुसार कुछ करने की भी आजादी नहीं है। अगर पत्नी कहीं घूमने चली जाए तो पति कहता है कीए "**तुम्हें वहाँ जाने की जरूरत क्या थी३ण्ण आगे से ये सब एडवेंजर्स मत करना"।** 12 इसप्रकार परिवार के लोगों के द्वारा स्त्री की इच्छा को दबाते आए है।

श्**सत्ता संवाद'** कहानी में नायिका को पति के पास प्रेम पत्र मिलने पर वह दुःखी ना होते हुए उसे छोड़ने के लिए तैयार हैंए वह कहती हैं कीए ष्**इसे कह दोए आने को तैयार है तो मेरी ओर से कोई रुकावट नहीं। आए संभाले तुम दोनों को। मेरी जान छूटे"।** 13

स्त्री जीवन में किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहती इसलिए वह पति की करतूत को नजर अंदाज ना करते हुए अपने स्वाभिमान की रक्षा करने करते हुए छल .कपट वाले रिश्तों से मुक्ति पाने के लिए भी तैयार है। ये वह स्त्री नहीं है जो पतिव्रता का पालन करके सब कुछ सेहती रहे।

कृष्णा सोबती की कहानी **'ऐ लड़की'** में माँ सूसन से कहती है कीए **"सूसनए शादी के बाद किसी के हाथ का झुनझुना नहीं बनना। अपनी ताकत बनाने की कोशिश करना"**14 माँ बताना चाहती है कीए परिवार में इतना नहीं खो जाना की अपनी पहचान ही भूल जाओ। एक बार शादी हो जाती है तो अलग .अलग जिम्मेदारीयों में तुम अपने अस्तित्व को मत खोना। अपनी ताकत स्वंय बनना।

'बोलने वाली औरत' कहानी की नायिका शिखा रात को बिस्तर में पड़ी देर तक सोचती है कीए ष्**उसकी नियति क्या है? न जाने कबए कैसे वह एक फुलटाइम गृहिणी बनती गई जबकि उसके जिदंगी की एक बिल्कुल अलग तस्वीर देखी थी। जिसे उसने निराला समझा वही कितना औसत निकला"।** 15

लेखिका कहना चाहती है कीए विवाह पूर्व स्त्री जो सोचती है वैसा नहीं होता जिम्मेदारीयों में स्त्री जकड़ कर रह जाती है।

श्**इरादा'** कहानी की नायिका सोचते हुए अपने आप से कहती है कीए ष्**स्कुल में शांति ने पढ़ा था कि हर कर्तव्य के साथ .साथ हमें अधिकार भी मिलता हैए लेकिन शादी के बाद इत तीन सालों में उसने पाया कि परिवार के काम कुछ इस प्रकृति के है कि उनमें कर्तव्य से कर्तव्य जन्म लेते हैंए अधिकार नही"।** 16

इरादा कहानी के माध्यम से लेखिका कहना चाहती है कीए अधिकार शब्द सिर्फ सुना है परतुं होता क्या है ये नहीं पता। स्त्री के जीवन में सिर्फ कर्तव्य करना है परतुं अधिकार उसे अब तक मिला नहीं है।

ममता कालिया कि कहानी में नायिका अपने आप से पूछती है कीए ष्**मेरा अपना करार कोई वजूद कोई इकाई नहीं। कहाँ चली है मेरी टक्कर लेने की अकड़। मूर्खो की तरह मैं उसके पीछे .पीछे चलने में सार्थकता क्यों अनुभव करती हूँए आगे .आगे चलने में क्यों नहीं"?** 17

यहाँ लेखिका की पात्र अपने वजूद की खोज स्वंय कर रही है।

परम्परागत पुरुष प्रधान समाज में स्त्री एक मूक पशु की तरह जीवन जी रही है। **'नमक'** कहानी की नायिका सिया स्कुल में नौकरी करना चाहती है पर उसका पति नहीं चाहता की वह नौकरी करें वह कहता हैं कीए **"स्कुल में नौकरी?ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण् तुम्हारे नाम से कंपनी खोल दी मैंने। मेरे दोस्त उस कंपनी का सब कुछ देखेगा। तुम्हें सिर्फ मालिक की तरह चेक दस्तखत करने होंगे"।** 18

शिक्षित समाज होते हुए भी पुरुष स्त्री को कठपुतली बनाकर ही रखना चाहता हैं।

पुरुष प्रधान समाज में स्त्री सदियों से दोयम दर्जे की नागरिक बनकर रही है। सारे मूल्यए मान्यताएँए परम्पराएँ मानती आयी है। महिला कहानीकारों ने पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में पनपती विसंगतियों ‌.विद्रुताओं ‌.विडंबनाओं को बड़ी गहराई से एक ‌.एक कर उकेरा है। स्त्री में एक नई स्व चेतना जागृत करके उन्हें नई दिशा प्रदान की है।

- **सन्दर्भ सूची**

1ण सं कल्पना वर्माए स्त्री विमर्श (विविध पहलू)ए पृण क्रण 110

2ण मैत्रेयी पुष्पाए समग्र कहानियाँ रू अब तक पृण क्रण 32

3ण वहींए वहींए पृण क्रण 33

4ण वहींए वहींए पृण क्रण 33

5ण वहींए वहींए पृण क्रण 33

6ण वहींए वहींए पृण क्रण 35

7ण वहींए वहींए पृ क्रण58

8ण वहींए वहींए पृण क्रण 58

9ण एक औरत की नोट बुक ;कथा विमर्श)ए पृण क्रण 46

10ण वहींए वहींए पृण क्रण 51

11ण वहीए वहीए पृण क्रण 51

12ण सुधा अरोड़ाए काला शुक्रवार (कहानी संग्रह)ए पृण क्रण 27

13ण सुधा अरोड़ाए एक औरत रू तीन बट्टा चार (कहानी संग्रह)पृण क्रण 35

14ण कृष्णा सोबतीए ऐ लड़की (समय सरगम)ए पृण क्रण 142

15ण ममता कालियाए बोलने वाली औरतए पृण क्रण 153

16ण वहीए वहीए पृण क्रण 10

17ण ममता कालियाए ममता कालिया की कहानियाँ (खण्ड .1द्धए पृण क्रण 228

18ण सुधा अरोड़ाए एक औरत रू तीन बट्टा चार (कहानी संग्रह)ए पृण क्रण 49